चमन बहार फ़िल्म में प्रदर्शित ग्रामीण किशोरों के विविध संदर्भ

सूरज पाण्डेय*

किशोरावस्था की विशेषताएँ देश-काल के अनुरूप बदलती रहती हैं। वर्तमान वैश्वीकरण और स्थानीयकरण के द्वंद्व ने ग्रामीण परिवेश में किशोरावस्था को नई दिशा दी है। उनके विद्यालय और विद्यालय के बाहर के अनुभव, अस्मिता संबंधी अपेक्षाएँ, व्यावसायिक जुड़ाव, यह सब अनेक कारणों से प्रभावित होते हैं। तदनुरूप किशोर अपने 'आत्म' से अन्य के संबंध की व्याख्या करते हैं। इस पृष्ठभूमि में यह लेख ग्रामीण परिवेश के ताने-बाने में कई प्रश्नों को संबोधित करता है। लगभग दो दशकों के इस संबंध में पर्याप्त विमर्शों को आधार बनाते हुए यह लेख ग्रामीण किशोरावस्था के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डालता है। साथ ही ग्रामीण किशोरों के संदर्भ, द्वंद्व तथा आकांक्षाओं को प्रकाशित करता है।

© NCERT not to be republished

विविधता से परिपूर्ण भारतीय समाज की धुरी वर्तमान में युवा वर्ग है। भारतीय जनगणना 2011 के अनुसार युवा एवं किशोरों की कुल जनसंख्या 42.2 करोड़ है। संपूर्ण भारतीय जनसंख्या में एक तिहाई प्रतिनिधित्व इनके महत्व और आवश्यकताओं को प्रदर्शित करता है। एक संपन्न राष्ट्र बनाने की दिशा में इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। राष्ट्रीय हित और इनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए नीतियों का निर्माण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसका प्रमुख कारण भारतीय समाज में विविधता का होना है। जहाँ एक तरफ भारतीय संस्कृति और संरचना ने इन्हें विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ प्रदान किए हैं, वहीं शहरी और ग्रामीण दशाओं व जीवनचर्या ने इसे और जटिल बना दिया है। विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि किसी भी देश हेतु उसके किशोर एवं युवा एक विशाल संपदा हैं। इनका बेहतर उपयोग तथा नियोजन ही वैश्विक लक्ष्यों की प्राप्ति का साधन सिद्ध होगा। जिस भी देश द्वारा इनके लिए बेहतर नीतियों का निर्माण किया जाएगा तथा उनकी विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए विकास के अवसर प्रदान किए जाएँगे; वह देश उतना ही विकास के वैश्विक लक्ष्यों के निकट आएगा। नीतियों के निर्माण और जटिलता के पीछे एक अन्य प्रमुख कारण समान आयु, स्थान और परिवेश से संबंद्ध होने

**शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

के पश्चात् इनमें विद्यमान व्यक्तिगत भिन्नताएँ भी हैं। एक जैसा सामाजिक स्तर, एक ही विद्यालय में अध्ययन और एक ही मित्रमंडली होने के बाद भी उनके आचरण और व्यवहार भिन्न होते हैं। यद्यपि इस भिन्नता के बावजूद कभी-कभी उनके लक्ष्यों में एकरूपता देखी जाती है, परंतु उसे प्राप्त करने के लिए उनके प्रयास, प्रेरणा और साधन एकसमान नहीं होते हैं। प्रत्येक के लिए उसका संदर्भ, आदर्श और कार्य प्रणाली विशिष्ट होती है (कुमार, 2018)।

दशकों से भारतीय ग्रामीण परिवेश से संबंधित अध्ययनों का एक प्रमुख कारण विशाल संख्या में किशोरों एवं युवाओं का गाँवों में रहना है। वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण के कारण विश्व के तमाम देश एक-दूसरे के नज़दीक आए, जिससे भारत भी अछूता नहीं रहा है। विकास के बदलते आयामों ने गाँवों तथा शहरों की दूरी को कम किया। आज शहर, गाँव की दहलीज़ तक पहुँच चुका है। जिसने जीवन जीने के तौर-तरीके, आचरण एवं व्यवहार में व्यापक बदलाव किया है, साथ ही जीवन लक्ष्यों को भी परिवर्तित किया है (यादव, 2013)। प्रायः70 के दशक में अधिकतर शोध कार्यों तथा अध्ययनों के विषय मुख्य रूप में 'शहरी परिवेश' से जुड़े थे। इसका एक प्रमुख कारण शहर की विशिष्ट जीवन शैली, उसके प्रति आकर्षण तथा रोज़गार की दशाएँ थीं। संचार माध्यमों में प्रगति, विकास के अवसर तथा जीवन शैली ने भारतीय जनमानस को अंतरराज्यीय तथा अंतरराष्ट्रीय प्रवासन हेतु तीव्र गति से प्रेरित किया। इस दौर में भारत में शहर और गाँव पर्याप्त भिन्नता लिए हुए थे। गाँव से शहर आने वाले को एक विशिष्ट दर्जा और सम्मान प्राप्त होता था। ऐसी स्थिति में नीतियों का निर्माण तथा अध्ययन की मूल विषय-वस्तु 'शहर' केंद्रित थी, जिसके कारण 70 से 90 के दशक तक गाँवों के संदर्भ में बहुत कम शोध अध्ययन हुए।

वर्तमान में भारत के लिए किशोर और युवा ऊर्जावान मानव संसाधन के रूप में उभरे हैं। विश्व के अनेक देशों की विशिष्ट संस्थाओं में भारतीय ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़े युवाओं की उपस्थिति ने भारतीय नीति-नियंताओं को उनकी क्षमताओं के विषय में सोचने के लिए बाध्य किया। किशोर तथा युवाओं की लगभग 60 प्रतिशत आबादी गाँवों में रहती है जो इसे और भी विशिष्ट बनाती है। विभिन्न अध्ययनों के परिणामों ने यह स्पष्ट किया है कि ये युवा सृजनशील डिजिटल अन्वेषक होने के रूप में उभरे हैं (परोदा, 2018)। ऐसी स्थिति में ग्रामीण युवाओं को मुख्यधारा से जोड़ने और उनका विकास सुनिश्चित किए बिना, इस विशाल मानव संपदा को उपयोगी बनाना संभव नहीं है। इन युवाओं की योग्यता के विकास तथा काम के अवसर उपलब्ध कराने हेतु विभिन्न सरकारी उपक्रमों द्वारा ग्राम विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, किंतु ग्रामीण युवाओं के संदर्भों और आवश्यकताओं की अनदेखी के कारण ये एक बड़े वर्ग को जोड़ने में सक्षम नहीं हो सके। इस प्रकार इन कार्यक्रमों की विफलता ग्रामीण परिवेश से संबंधित गहन अध्ययन की आवश्यकता को प्रदर्शित करती है।

किशोर शिक्षा से संबंधित प्रयास तथा स्थिति

गाँवों की विशेषताओं और समस्याओं को स्वर देने के लिए वर्तमान में भारत सरकार द्वारा किशोरों तथा युवाओं को लक्षित करते हुए विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। राष्ट्रीय युवा नीति (2014) में किशोरों की संख्या, सकल राष्ट्रीय आय में

© NCERT not to be republished

किशोरों की भूमिका, महत्ता, उद्देश्य तथा उनकी आवश्यकता आदि से संबंधित पक्षों की विस्तार से चर्चा की गई है। इस नीति में 11 वरीयता प्राप्त क्षेत्रों का निर्धारण किया गया, जिनके माध्यम से युवाओं का समग्र विकास किया जा सके। युवाओं के समग्र विकास हेतु नेहरू युवा केंद्र संगठन, राष्ट्रीय युवा कोर, राष्ट्रीय सेवा योजना, राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय युवा नेता कार्यक्रम, विभिन्न खेल महोत्सव आदि सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं। इन विविध कार्यक्रमों का उद्देश्य किशोरों तथा युवाओं को विभिन्न उत्पादक कार्यों से जोड़ना है। इसी प्रकार अप्रैल, 2018 में युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के निर्देशन में दो पृथक विभाग— युवा कार्यक्रम विभाग तथा खेल विभाग सृजित किए गए तथा इसके उद्देश्यों एवं लक्ष्यों में विस्तार किया गया। जिसके परिणामस्वरूप; 'राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव 2021' (12 जनवरी, 2021) में देश के विभिन्न भागों से किशोर एवं युवा, स्थानीय समस्याओं से लेकर राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर तक के विषयों को संबोधित करते हुए नज़र आए।

इसी प्रकार किशोरों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा 'किशोरावस्था शिक्षा' के नाम से व्यापक पाठ्यक्रम विकसित किया गया। भारत में किशोरावस्था शिक्षा से संबंधित इतिहास पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट होता है कि अन्य देशों की तरह भारत में इसका आरंभ यौन शिक्षा के रूप में अस्तित्व में आया (अरोड़ा, 2014)। भारत में 'यौन शिक्षा' (सेक्स एजुकेशन) के नाम से पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया और इस संबंध में जागरूकता अभियान भी चलाए गए। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो शहरी परिवेश में ग्रामीण परिवेश की अपेक्षा अधिक जागरूकता तथा पाठ्यक्रम के प्रति सकारात्मक परिणाम देखने को मिलते हैं। "किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य युवाओं को वास्तविक जीवन परिस्थितियों में सकारात्मक एवं उत्तरदायी ढंग से प्रतिक्रिया देने के लिए सटीक, आयु उपयुक्त तथा सांस्कृतिक दृष्टि से संबंधित सूचना, स्वस्थ मनोवृत्ति तथा कौशल विकसित करने में सक्षम बनाकर उन्हें सशक्त बनाना है" (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, 2006)।

किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम के समवर्ती मूल्यांकन (2011) के अनुसार पाठ्यक्रम के प्रति सकारात्मक परिणाम देखने को मिलते हैं, किंतु इस दिशा में अभी और अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है (*किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम— प्रशिक्षण एवं संसाधन सामग्री,* 2017)। किंतु अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में यह शिक्षा किशोर तथा युवाओं की पहुँच से दूर है। इसका प्रमुख कारण आज भी ग्रामीण परिवेश में इन मुद्दों पर मौन और संकुचित संवाद है। 'यौन शिक्षा' के नाम से एक बड़ा वर्ग किशोर एवं किशोरियों को सीमाबद्ध करते दिखाई देता है। संख्यात्मक आँकड़ों की दृष्टि से देखें तो एक बड़ी संख्या में भारत सरकार तथा रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा संचालित कार्यक्रमों का लाभ किशोर उठा रहे हैं।

इस संबंध में शोधार्थी द्वारा अपने शोध अध्ययन हेतु महाराष्ट्र के वर्धा ज़िले के लगभग 40 गाँवों में भ्रमण के दौरान (25 अक्तूबर, 2020 से 5 दिसंबर, 2020 के मध्य) ग्रामीणों से 'किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम' तथा 'यौन शिक्षा' के संबंध में पूछने पर यह ज्ञात हुआ कि कुछ ग्रामीणों को 'यौन शिक्षा' के बारे में कुछ आधी-अधूरी तथा

© NCERT not to be republished

सीमित जानकारी है, किंतु अधिकांश इस संबंध में बात करने से मना कर देते हैं। इसका प्रमुख कारण उनका इस शिक्षा के संबंध में नकारात्मक धारणा बना लेना है। वहीं इन गाँवों में 'किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम' जैसे पाठ्यक्रम के विषय में विस्तृत सूचना उपलब्ध कराने पर उनकी सकारात्मक प्रतिक्रिया देखने को मिली। उनका मानना है कि यदि दोनों एक ही स्वरूप को लिए हुए हैं तो वे 'यौन शिक्षा' के स्थान पर 'किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम' के नाम से अपने बच्चों को जुड़ने के लिए प्रेरित करेंगे।

इसी प्रकार किशोरों की प्रतिपुष्टि इस दिशा में इंगित करती है कि 'यौन शिक्षा' के संबंध में किसी से बात करने पर वे उसके विषय में गलत धारणा बना लेते हैं और बहुत जल्दी ही गाँव में उनका मज़ाक बनने लगता है। अध्यापक से भी बातें करने पर वे उनकी समस्याओं के विषय में बात करने के स्थान पर इसे टालते दिखते हैं। ध्यातव्य है कि इस चर्चा के दौरान किशोरों, अभिभावकों तथा अध्यापकों द्वारा किशोरावस्था के जैविक पक्ष को ही महत्व दिया गया, जो यह स्पष्ट करता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में किशोर अथवा किशोरी शिक्षा तथा युवा विकास कार्यक्रमों की स्थिति निर्धारित लक्ष्यों से काफी दूर है, जिसके लिए जागरूकता अभियान, विशेष आयोजन तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सूक्ष्म स्तर पर आयोजित किए जाने की आवश्यकता है।

यह जागरूकता का कार्य समय-समय पर भारतीय साहित्य और सिनेमा ने भी किया है। जिसके माध्यम से एक विशेष तबके से जुड़े लोगों के जीवन-व्यवहार और कार्यप्रणाली से संबंधित प्रसंग एक विशिष्ट वर्ग तक पहुँचता है। यह अलग प्रश्न है कि संबंधित फ़िल्म में प्रदर्शित घटनाओं अथवा कथानक में काल्पनिकता का पुट किस हद तक है? लेकिन भारतीय ग्रामीण परिवेश के संदर्भों में होने वाले व्यापक परिवर्तन ने भारतीय सिनेमा के विषयों और नज़रिये में भी बदलाव किया है। आज कॉमर्शियल फ़िल्मों के सापेक्ष वास्तविक संदर्भ और समसामयिक मुद्दों से जुड़ी फ़िल्में भी स्थान पा रही हैं। फ़िल्म की सफलता इस बात का प्रमाण है कि इनके विषयों से समाज का एक बड़ा वर्ग जुड़ाव महसूस करता है और इसके माध्यम से अपनी उपस्थिति को दर्ज कराता है। विगत एक दशक से ग्रामीण परिवेश से संबद्ध संदर्भ (जैसे— गरीबी, बेरोज़गारी, कृषि, शिक्षा की स्थिति, महिलाओं की दशा तथा ग्रामीण राजनीति आदि) बहुत-सी फ़िल्मों के केंद्र में रहे हैं। ये वे संदर्भ हैं, जिनसे संबंधित फ़िल्में बहुत अधिक आर्थिक हित तो नहीं साध पाती, किंतु संबंधित समस्याओं को पहचान अवश्य दिला जाती हैं।

इसी प्रकार किशोरों एवं युवाओं के विभिन्न संदर्भों को प्रदर्शित करती फ़िल्म *चमन बहार* (2020, निर्माता सिद्धार्थ आनंद कुमार, विक्रम मेहरा तथा निर्देशक अपूर्वधर बड़गैय्या) का विश्लेषण इस लेख में प्रस्तुत किया गया है। इस फ़िल्म में भारतीय ग्रामीण परिवेश से जुड़े किशोरों की जीवनचर्या, आदतों एवं व्यवहार से संबंधित विविध संदर्भों को सम्मिलित किया गया है। उन्हीं प्रस्तुत संदर्भों में से एक 'ग्रामीण युवक की व्यावसायिक आकांक्षा एवं संलग्नता' को देखने का प्रयास किया गया है। इस फ़िल्म को देखते हुए कुछ प्रश्न प्रकट हुए, चयनित फ़िल्म में ग्रामीण युवकों की कौन-कौन सी आकांक्षाएँ प्रस्तुत की गई हैं? ये आकांक्षाएँ उनकी अकादमिक, व्यावसायिक

© NCERT not to be republished

एवं अन्य संलग्नताओं को कैसे प्रभावित कर रही हैं? इन प्रश्नों की सहायता से यह समझा जा सकेगा कि ग्रामीण किशोरावस्था के प्रमुख आयाम कौन से हैं?, कौन सी परिस्थितियाँ और संदर्भ उन्हें आकर्षित करते हैं? तथा उन परिस्थितियों में वह उनका सामना कैसे कर रहे हैं? *चमन बहार* फ़िल्म की संक्षिप्त पटकथा नीचे बॉक्स में प्रस्तुत की गई है। इस लेख में किशोरों से संबंधित 'पहचान समस्या, व्यावसायिक संलग्नता, मित्रमंडली तथा व्यक्तिगत संबंध, एक तरफा प्रेम, प्रेम का प्राकट्य तथा उससे उत्पन्न द्वंद्व' आदि बिंदुओं को निर्धारित किया गया है। इस फ़िल्म में विभिन्न पात्रों के माध्यम से ग्रामीण किशोरों की जीवनचर्या को प्रस्तुत किया गया है, किंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रत्येक ग्रामीण किशोर ऐसे ही होते हैं। बल्कि इससे अलग उनके अपने व्यक्तिगत संदर्भ और अनुभव होते हैं। इसका उद्देश्य मात्र यह है कि ग्रामीण परिवेश से संबंधित युवाओं का एक वर्ग ऐसा भी है, जिनके संबंध में विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है, जिससे उन्हें मुख्यधारा से जोड़ा जा सके। फ़िल्म में प्रस्तुत किशोरों से संबंधित विविध संदर्भ निम्नवत हैं—

चमन बहार फ़िल्म की संक्षिप्त पटकथा

चयनित फ़िल्म *चमन बहार* की पटकथा ग्रामीण परिवेश से संबद्ध किशोरों के जीवन चरित्र एवं विशेषताओं को प्रदर्शित करती है। यह फ़िल्म ग्रामीण किशोर के विविध परिप्रेक्ष्य, व्यक्तिगत भिन्नताओं तथा गुणों को समाहित किए हुए ऐसे व्यवहार को प्रस्तुत करती है जिसमें किशोर या युवा अपने द्वंद्व के चलते विभिन्न प्रकार के निर्णय लेता है। ये द्वंद्व तथा उससे उत्पन्न निर्णय जहाँ एक तरफ़ उसे विस्तार देते दिखाई पड़ते हैं तो वहीं अकारण ही समस्याओं के वाहक भी बनते हैं। फ़िल्म का आरंभ नायक 'बिल्लू' के पहचान निर्माण के सपने से होती है। इससे पहले बिल्लू की दो पीढ़ियाँ वन विभाग में चौकीदार का काम करती थीं। पिता की इच्छा है कि वो भी पीढ़ियों से चले आ रहे इसी काम को व्यवसाय के रूप में चुने। लेकिन बिल्लू की इच्छा शहर में नई पहचान बनाने की है, जिसके लिए वह अपने मित्र की सहायता से शहर में एक पान की गुमटी खोलता है। कुछ ही समय के बाद उसे पता चलता है कि उसके मित्र ने उसे धोखा दिया है। जिस रास्ते पर उसकी दुकान है वह ज़िले की सीमा बदलने से दूसरे गाँव में आ गई है। ज़िला मुख्यालय बदल जाने से उस रास्ते पर केवल गाँववालों का ही आना-जाना रह गया था। उधार न चुका पाने की स्थिति में उसे मजबूरी में दुकान खोलनी पड़ती है। कुछ ही समय बाद उसकी दुकान के सामने बने एकमात्र मकान में एक परिवार रहने आ जाता है। जिनके आने से बिल्लू के आस-पास का वातावरण बदल जाता है। इसका कारण उस परिवार में एक किशोरी का होना था। जिसे देखने के लिए आस-पास के किशोर लड़के उसकी दुकान पर आने-जाने लगते हैं। जैसे-जैसे फ़िल्म की नायिका 'रिंकू' के संबंध में बात शहर में फैलती है, वैसे-वैसे लड़कों की संख्या बिल्लू की दुकान पर बढ़ती जाती है। उसकी आमदनी बढ़ने के साथ-साथ उसकी दुकान पर किशोर लड़कों के आपसी द्वंद्व भी बढ़ते जाते हैं। वहीं बिल्लू का भी रिंकू के प्रति आकर्षण बढ़ने लगता है। जिसके कारण दुकान पर आने वाले लड़कों से पीछा छुड़ाने के लिए वह तमाम उपाय करने लगता है। इन लड़कों से पीछा छूटने पर वह रिंकू को

© NCERT not to be republished

कार्ड देने का प्रयास करता है जो रिंकू के पिता को मिल जाता है। इसके संबंध में रिंकू के पिता अपने परिचित के एक पुलिस वाले को बताते हैं। संदेह के आधार पर पुलिस द्वारा बिल्लू की पिटाई कर दी जाती है और उसे चेतावनी देकर छोड़ दिया जाता है। इस घटना से बिल्लू स्वयं को बहुत ही अपमानित महसूस करता है और वह रिंकू को बदनाम करने में लग जाता है। इस बात का पता पुलिस को चल जाता है और पुलिस द्वारा उसे गिरफ़्तार कर लिया जाता है। इस गिरफ़्तारी के साथ-साथ उसकी पान की दुकान 'चमन बहार' को भी तोड़ दिया जाता है। इसे एक मुद्दा बनाकर स्वार्थसिद्धि में नेता, मीडिया तथा आस-पास के लड़कों द्वारा धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया जाता है, लेकिन उसकी जमानत के विषय में कोई नहीं सोचता। उसकी जमानत रिंकू के पिता द्वारा कराई जाती है। बिल्लू को 'अपराध बोध' होने पर वह रिंकू के परिवार से माफ़ी माँगने जाता है। जहाँ रिंकू के पिता द्वारा यह बताया जाता है कि वे ऐसा बिलकुल नहीं चाहते थे। उन्होंने इंस्पेक्टर के परिचित होने के नाते कार्ड की बात बताई थी, किंतु गरम स्वाभाव के होने के कारण उनके द्वारा यह सब किया गया। रिंकू के परिवार से मिलने के बाद उसे बहुत ही ग्लानि महसूस होती है और वह बिना कुछ बोले ही वहाँ से चला जाता है। कुछ दिन बाद रिंकू का परिवार शहर छोड़कर चला जाता है। फ़िल्म के अंत में बिल्लू को रिंकू द्वारा बनाई गई एक पेंटिंग घर के बाहर लटके हुए मिलती है, जिससे उसे पता चलता है कि रिंकू भी उसे पसंद करती थी। एक बार फिर से वह अपने किए गए व्यवहार पर पछताता है।

© NCERT not to be republished

पहचान निर्माण

चयनित फ़िल्म का नायक 'बिल्लू' एक 18–19 वर्ष का किशोर है, जिसके पिता वन विभाग में चौकीदार हैं। पिता की इच्छा है कि उसका बेटा भी वन विभाग में चौकीदारी का ही काम करे। जिससे जल्द से जल्द उसकी शादी हो जाए और वह अच्छे से जीवन बिता सके। इसके विपरीत वह किशोर शहर में अपनी 'स्वयं की पहचान' बनाना चाहता है। इस पहचान को बनाने के पीछे कहीं न कहीं उसके मस्तिष्क में अपने पिता द्वारा 'अधिकारियों की सेवा करते हुए जीवन बिताना', 'जंगल में भालू द्वारा शील भंग करने का डर' और 'घर के खस्ता आर्थिक हालात' हैं। उसका मानना है कि वह अब बड़ा हो चुका है। अब उसे अपने पिता की तरह चौकीदार के रूप में छोटी-सी तनख्वाह में जीवनयापन नहीं करना, बल्कि उसकी एक अलग स्वयं की पहचान होनी चाहिए; जिसमें ढेर सारा पैसा हो, इज़्ज़त हो। इसके लिए उसे अपने पिता से कटु शब्द भी सुनने को मिलते हैं, साथ ही 'पनवाड़ी लाल' के नाम का संबोधन भी। उनका मानना है, पहचान बनाना कोई आसान काम नहीं है, पनवाड़ी बनने से ज्यादा इज़्ज़त वन विभाग की नौकरी में है। इस संवाद में पिता-पुत्र के द्वंद्व को प्रस्तुत किया गया है; कैसे पिता अपने तर्को से, अनुभव से स्वयं की सोच को सही साबित करने की कोशिश करता है तो वहीं एक किशोर, जो अपनी पहचान बनाने के लिए दृढ़ है, वह अपनी सोच को ही सही मानता है।

इस फ़िल्म के मुख्य पात्र बिल्लू का खुद की पहचान को बनाने के लिए जो द्वंद्व दिखाया गया है वह अधिकांश किशोरों में देखा जा सकता है। इसी के सापेक्ष उत्तर किशोरावस्था के समान आयु वर्ग

के पात्रों के पहचान निर्माण में आशु सुल्तानिया, शिलादित्य सिंह, छोटू और सोमू, रितेश (डी.एफ.ओ. का पुत्र) और नायिका रिंकू ननोरिया के संदर्भ उससे भिन्न हैं। 'आशु सुल्तानिया' के पिता की पुश्तैनी ज़मीन जायदाद और संपन्न स्थिति के आधार पर संवर्गीय समाज में छवि 'बड़े भैया' की है। इससे इतर एक पहचान सरस्वती स्पोर्ट्स के मालिक के रूप में भी है। वहीं 'शिलादित्य सिंह' की पहचान इलाके की सत्तादल की एक बड़ी नेत्री के पुत्र की है। इस पहचान के आधार पर वह शक्ति प्रदर्शन करते दिखता है। साथ ही 'युवाओं के प्रतिनिधि' की एक स्व-घोषित पहचान भी धारण कर ली है।

'छोटू और सोमू' नाम के दो पात्र ऐसे हैं जिनकी पहचान इधर-उधर करके ज़िंदगी जीने वाले के रूप में है। उनके लिए कार्य की सिद्धि का प्रश्न ही प्रमुख तथा अंतिम लक्ष्य है। इसी प्रकार एक अन्य पात्र रिंकू ननोरिया को पहचान देने का कार्य उसके साथ पढ़ने वाले किशोरों द्वारा किया जाता है। रिंकू की पहचान किशोरों के मध्य आधुनिक 'शहरी लड़की' की है। बिल्लू द्वारा उसे एक 'घरेलू' पहचान भी दी गई है। किंतु फ़िल्म में प्रस्तुत उसकी विशेषताओं के अनुरूप वह एक अच्छी चित्रकार है। उपर्युक्त पात्रों को यदि किसी गाँव विशेष के संदर्भ में देखें तो स्पष्ट होगा कि एक ही गाँव में इन विविध संदर्भों से संबंधित पहचान लिए हुए किशोर एवं युवा मिल जाएँगे, जिनकी पहचान निर्माण में उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि प्रमुख रूप से कार्य करती है। साथ ही मैगनेट कुमार जैसे अन्य किशोर भी दिखाई देंगे, जो गाँव के अन्य दबंग प्रवृत्ति के युवकों का अनुसरण करते दिखेंगे।

इस फ़िल्म का प्रत्येक पात्र शिक्षा से किसी न किसी तरह संबंधित अवश्य है, फिर भी यहाँ रेखांकित करने की आवश्यकता है कि केवल शिक्षा ही उसकी पहचान का हिस्सा नहीं है। अपितु पहचान निर्माण में मीडिया, नगर का प्रभाव तथा स्व-विकास की इच्छा प्रमुख रूप से अभिप्रेरित बल का काम कर रही है। वे सब अपनी व्यक्तिगत अभिप्रेरणा तथा पारिवारिक परिस्थितियों के आधार पर अपनी पहचान बनाने की इच्छा रखते हैं। जिसे फ़िल्म के नायक बिल्लू तथा अन्य दो पात्र शिलादित्य सिंह और आशु सुल्तानिया के माध्यम से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

व्यावसायिक संलग्नता

व्यावसायिक संलग्नता के रूप में प्रमुख पात्र बिल्लू एक पान की दुकान चलाने के लिए संघर्षरत है। वहीं एक अन्य पात्र आशु सुल्तानिया पुश्तैनी दुकान का मालिक होते हुए किसी अन्य की दुकान में वीडियो गेम खेलता दिखाई पड़ता है। साथ ही संदर्भ विशेष में बिल्लू की दुकान पर आता और दुकान के काम से अलग-अलग शहर में जाता है। वहीं शिलादित्य सिंह उर्फ़ शीला की व्यावसायिक संलग्नता प्रमुख रूप से माता जी के प्रतिनिधि के रूप में है। जो माता जी के काम से अलग-अलग जगहों पर जाता है। इसी संलग्नता के आधार पर वह स्वयं की व्यावसायिक इच्छा की पूर्ति करना चाहता है। शीला के साथ 4–5 किशोर हमेशा दिखाई पड़ते हैं। ये ऐसे किशोर हैं जिनके लिए किसी के साथ हमेशा रहना व्यावसायिक अवसर के समान ही है। जिसमें उन्हें अपने दैनिक जीवन से संबंधित खर्च का प्रबंध हो जाता है। एक ओर उन्हें प्रत्यक्ष रूप से कुछ धन मिल रहा है तो दूसरी ओर चुनाव जीतने पर स्वयं की

© NCERT not to be republished

पदोन्नति के रूप में देखते हैं। जिसमें उन्हें आर्थिक लाभ के साथ-साथ कुछ शक्ति भी प्राप्त होगी। प्रत्येक परिस्थिति में उनकी व्यावसायिक संलग्नता और समर्पण उच्च स्तर को लिए हुए हैं। इसी प्रकार 'छोटू और सोमू' की संलग्नता किसी भी अन्य पात्र की अपेक्षा सर्वाधिक लक्ष्य केंद्रित है। ये किसी भी परिस्थिति में स्वयं के लिए हित साधने का मौका नहीं छोड़ते हैं। साथ ही अपने लक्ष्य के अनुरूप किसी को भी साधना इनके लिए बहुत ही आसान काम है। ये पूरी तन्मयता से सिर्फ़ और सिर्फ़ धनोपार्जन के विषय में ही सोचते रहते हैं।

फ़िल्म में प्रस्तुत दृश्य के अनुरूप कैरम क्लब की स्थापना, सट्टेबाजी करना और बिल्लू की दुकान को स्वयं के नुकसान से जोड़कर देखना, निराश या हताश हुए बिना प्रयास करते रहना और बिल्लू की दुकान पर संभावना समाप्त होने पर शिलादित्य सिंह की फैक्ट्री में तीन कैरम डालना; छोटू एवं सोमू के लिए एक व्यावसायिक अवसर ही है। यद्यपि इनका व्यावसायिक संदर्भ समाज में प्रचलित मानकों के अनुरूप नहीं है। किंतु अन्य किसी की अपेक्षा वे धनोपार्जन के लक्ष्य पर अपेक्षाकृत अधिक केंद्रित दिखते हैं। प्रत्येक गाँव में कुछ व्यक्ति और युवा ऐसी प्रवृत्ति को धारण किए होते हैं जिन्हें पढ़ाई-लिखाई और नौकरी करने के स्थान पर पैसे कमाने के अन्य साधनों पर ज़्यादा भरोसा होता है, जैसे— बिजली विभाग से संबंधित काम, बैंक व पेंशन से संबंधित काम, किसी वृद्ध को बैंक, शहर अथवा हॉस्पिटल ले जाना, दो भाइयों के झगड़ों में मध्यस्ता करना, गाँव के धन संपन्न और प्रतिष्ठित व्यक्तियों की जी-हुज़ूरी आदि। किसी भी परिस्थिति में स्थापित रोज़गार में संलग्न न रहने वाले लड़के अन्य की अपेक्षा गाँव वालों के लिए अधिक फ़ायदेमंद रूप में दिखाई पड़ते हैं।

संपूर्ण फ़िल्म में प्रस्तुत पात्रों की कार्य दृष्टि व्यावसायिक आकांक्षाओं के अनुरूप है, जैसे— बिल्लू का नियम से दुकान खोलना, दुकान के लिए सामान लाना, ग्राहकों को जोड़े रखने के लिए मनोरंजन के साधन की व्यवस्था करना। इसी प्रकार आशु और शीला की संलग्नता स्वयं की व्यावसायिक आकांक्षाओं के अनुरूप प्रभावी रूप से है। किंतु महत्वपूर्ण यह है कि व्यावसायिक संलग्नता के मध्य जब व्यक्तिगत रुचि के अनुरूप अन्य संलग्नताएँ बढ़ती हैं तो व्यावसायिक हित और आकांक्षाएँ प्रभावित होती हैं। संदर्भ विशेष से प्रभावित होने से बिल्लू का मन अपनी दुकान में नहीं लगता और वह दुकान को बाहर से बंद करके अंदर छिपा रहता है। जिससे उसके ग्राहक बाहर खड़े प्रतीक्षा करते रहते हैं। इसी प्रकार आपसी द्वंद्व में आशु और शीला हमेशा एक-दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते हैं। वहीं छोटू और सोमू की दृढ़ संलग्नता बिल्लू के लिए मुसीबत बनती है। लेकिन फ़िल्म के आरंभ में इन दोनों की आर्थिक स्थिति को जिस प्रकार से दिखाया गया; उसके स्थान पर फ़िल्म के अंत में बाइक पर आना, पुराने उधार को चुकाना, नए सामान के पैसे देना और बाइक पर जाना, उनकी उत्तरोत्तर आर्थिक प्रगति का सूचक है। पहले और बाद की स्थिति की तुलना में किसी अन्य की अपेक्षा वे अधिक विकास करते दिखते हैं।

किशोरों के सपनों की दुनिया

किसी भी किशोर के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है— सपने देखना। वह अपने कल्पना जगत में

© NCERT not to be republished

तालिका 1— किशोर पात्रों की व्यावसायिक संलग्नता और संदर्भ

किशोर पात्र	व्यावसायिक संलग्नता	संदर्भ
बिल्लू	पान की दुकान खोलना	स्वतंत्र पहचान निर्माण, परंपरागत व्यवसाय से मुक्ति
शिलादित्य सिंह	चुनाव लड़ना	शक्ति और सत्ता द्वारा पहचान निर्माण, परिवार की पृष्ठभूमि का लाभ उठाना
आशु सुल्तानिया	पुश्तैनी दुकान संभालना	हीरो की छवि का आदर्श
छोटू एवं सोमू	दैनिक खर्च का जुगाड़ करना	पहचान संबंधी निर्णय को टालते रहना

बहुत-सी ऐसी बातों को स्थान देता दिखाई पड़ता है, जिसे वह यथार्थ में प्रस्तुत करने में संकोच महसूस करता है। लेकिन कल्पना जगत में कुछ ऐसे विचारों को भी बल मिलता है जिसके संबंध में उनकी सोच दृढ़ होने लगती है और अनुकूल परिस्थिति मिलने पर वे प्रयास करते दिखाई पड़ते हैं। जबकि अनुकूल परिस्थिति न होने पर भी वे स्वयं के मानकों पर उसे निर्धारित कर प्रयास करना प्रारंभ कर देते हैं। यद्यपि कभी उन्हें इसमें सफलता मिलती है तो कभी-कभी निराशा। किंतु एक वयस्क की अपेक्षा किशोरावस्था में वे सपना पूरा न होने की स्थिति में अपेक्षाकृत अधिक संघर्ष करते दिखते हैं। यह फ़िल्म उनकी इसी बात का समर्थन करते हुई दिखाई पड़ती है कि किशोरों के जो सपने और अरमान हैं, वे उनके जीवन के प्रेरक बल हैं। अगर बिल्लू दुकान खोलना चाहता है और शिलादित्य नेता बनना चाह रहा है तो उनके पीछे यह सपने जो कार्य कर रहे हैं, वह उनके जीवन पर कब्ज़ा किए हुए हैं।

बिल्लू के गाँव से निकलने और दुकान तक पहुँचने के बीच (संगीत के सहारे) शहर के तमाम दुकानों का दृश्य, उसे देखकर मुख पर जो प्रसन्नता का भाव है, उसके संकल्प को और दृढ़ करते हुए प्रतीत होते हैं। मित्र की सहायता से एक दुकान (पान की गुमटी) चलाने का लाइसेंस प्राप्त करना और थोक विक्रेता से पान का सामान उधार लेना, इस व्यवसाय के साथ जुड़ी उसकी बहुत-सी अनकही उम्मीदों को व्यक्त करता है। जब वह दूसरे दिन दुकान पर पहुँचता है तो उसे पता चलता है कि उसका गाँव अब दूसरे ज़िले में आ गया है। ज़िला मुख्यालय बदल जाने के कारण अब उस रास्ते पर केवल गाँव वाले ही आएँगे और जाएँगे। ऐसे में उसे अपने साथ हुए छल का पता चलता है, जो उसके सपनों को आघात पहुँचाता है। अपनी दुकान को बंद करने तथा थोक विक्रेता का उधार चुकाने के लिए सहायता की उम्मीद में वह उसी व्यक्ति के पास जाता है, जिससे उसने वह दुकान ली थी। किंतु उसे सहायता नहीं मिलती और अब उधार चुकाने के लिए उसे वापस दुकान पर बिना मन के मजबूरी में बैठना पड़ता है। संपूर्ण घटनाक्रम एक किशोर के समक्ष नवीन व्यवसाय को स्थापित करने में आने वाली समस्याओं एवं बाधाओं को व्यक्त करता है। यह वह स्थिति है जब अपने सपनों को पूरा करने के लिए एक ग्रामीण युवक छोटे-छोटे प्रयासों को प्रारंभ करता है, किंतु वह उसमें असफल हो जाता है। बाहरी दृष्टि से उसकी एक छोटी-सी भूल नज़र आती है जो उसने भावावेश में की थी। किंतु उसके इस निर्णय की समीक्षा करें तो यह स्पष्ट होगा

कि एक ग्रामीण युवक के लिए एक छोटा या बड़ा व्यवसाय मात्र नहीं है, बल्कि इस निर्णय में उसकी ढेरों आकांक्षाएँ और सपने जुड़े रहते हैं; जो प्रायः एक प्रौढ़ व्यक्ति की अपेक्षा युवा मन को तोड़ने में अधिक प्रभावी होती हैं। इस प्रकार बिल्लू जहाँ एक तरफ व्यावसायिक द्वंद्व से बाहर निकलता है तो वहीं छोटू और सोमू के कैरम क्लब से जुड़ी आकांक्षाओं को चोट पहुँचती दिखती है। वहीं एक अन्य पात्र मैग्नेट कुमार का डायलाग "खून निकोटीन मांगता है" किशोरों में नशे के प्रति आसक्त भाव को भी व्यक्त करता है। जिसके लिए बिल्लू मात्र नशा करने का सामान बेचने वाले के रूप में है और दुकान बंद होने से वह उस स्थान पर देर तक समय व्यतीत नहीं कर पा रहा है।

प्रेम का प्राकट्य

किशोरावस्था की एक प्रमुख विशेषता है— विषमलिंगी आकर्षण। यह आकर्षण कब घनिष्टतम भाव में परिवर्तित हो जाता है, यह पता ही नहीं चलता। इस संदर्भ विशेष से प्रभावित होकर एक ग्रामीण किशोर अथवा युवा के जीवन में क्या-क्या बदलाव आते हैं? वह इस फ़िल्म के नायक बिल्लू के माध्यम से व्यक्त किया गया। इस अवस्था में उनका स्वयं के स्वप्न लोक में डूबे रहना, प्रत्येक स्थिति में प्रसन्नता का अनुभव करना, काल्पनिक संदर्भ में भविष्य के लिए सपने बुनना, स्वयं को सजाना आदि व्यवहारों में तीव्रता आ जाती है। संदर्भ विशेष में भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु एक ग्रामीण किशोर स्थान-स्थान पर (जैसे— पत्थरों, पेड़ के तने और दीवार आदि) विभिन्न नामों को उकेरता फिरता है, वास्तविक स्थिति के ज्ञात न होने पर भी वह अपने हाथों पर व्यक्ति विशेष का नाम गुदवा लेता है, घंटों इधर-उधर घूमता है, कार्ड अथवा पत्र देने का प्रयास करता है। शहरी परिवेश में भी किशोरों में इस प्रकार की संवेदनाएँ देखने को मिलती हैं, परंतु उनके भावाभिव्यक्ति का तरीका इससे भिन्न होता है। वहीं ग्रामीण परिवेश में प्राप्त अधिकांश उदाहरणों में इस प्रकार की प्रक्रियाएँ समानता लिए हुए दिखती हैं, जिसकी पुष्टि हेतु कुछ ग्रामीण किशोरों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया गया और संदर्भ विशेष में उनके अनुभवों को जानने का प्रयास किया गया। उनके अनुभव उपर्युक्त वर्णित प्रक्रियाओं का ही समर्थन करते दिखाई पड़ते हैं। साथ ही कुछ अन्य व्यवहारों को भी अंकित किया गया, जैसे— भावावेश में अनुचित व्यवहार करना, सम-वयस्क लड़कों से मार-पीट या झड़प, स्वघोषित रक्षक का रूप धारण करना आदि। उपर्युक्त वर्णित व्यवहार के संदर्भ में बिल्लू को उन तमाम प्रक्रियाओं को करते हुए दिखाया गया, जो उसके लिए समस्या का कारण बनती हैं।

© NCERT not to be republished

मित्रमंडली अथवा वय समूह

किसी भी किशोर द्वारा सम-वयस्क मित्रों के साथ की गई अंतःक्रिया उनके विकास और समायोजन को प्रभावित करती है। प्रायः किशोर अपने परिवार से दूर होने लगते हैं और अधिक से अधिक समय वय समूह या मित्रमंडली के मध्य बिताने की कोशिश करते हैं। उनके हृदय में इस वय समूह के लिए एक अलग ही श्रद्धा अथवा भावना होती है, जिसके कारण वे उनकी बातों को मानते दिखाई पड़ते हैं। इनसे वे जहाँ विभिन्न संदर्भों को पाते हैं, वहीं अनौपचारिक रूप से जीवन की उन तमाम उलझनों के संबंध में संवाद करते दिखते हैं जिनकी चर्चा सामान्यतः वे

अपने परिवार अथवा समाज में करने से बचते हैं। यह मुक्त स्वरूप कभी उन्हें सही रास्ते पर ले जाता है तो कभी समस्याओं का कारण भी बनता है। इसी प्रकार की कुछ प्रकृति चयनित फ़िल्म में प्रस्तुत की गई है। जिसमें बिल्लू के एक मित्र दिनेश द्वारा एक दुकान की व्यवस्था कराई जाती है जिसके लिए बिल्लू अपने दोस्त का अहसानमंद है। जबकि दिनेश उसके माध्यम से अपनी व्यक्तिगत समस्या का समाधान देखता है।

एक अन्य दृश्य में बिल्लू एक पत्र लिखवाने के लिए स्वयं से उम्र में बड़े (लगभग दो दशक) के मास्टर के पास जाता है जो उसे 'माई फ्रेंड बिल्लू' के नाम से संबोधित करते हैं और प्रसन्नता से गले लगाते हैं। इसी प्रकार एक अन्य दृश्य में इच्छानुरूप परिणाम की प्राप्ति न होने पर वह ऐसे वृद्ध पुजारी से बात करता है जो उसके पिता से भी अधिक उम्र का है। इन दोनों दृश्यों में वे एक-दूसरे से अपने व्यक्तिगत संबंधों पर बात करते दिखते हैं जिसका ज़िक्र दोनों ने कभी भी किसी से नहीं किया होता है। उस बूढ़े पुजारी की मृत्यु उसे किसी अपने की मृत्यु की तरह ही दुःख पहुँचाती है। साथ ही उसके द्वारा कही हुई बात उसे 'कुछ विशेष करने के लिए' प्रेरित करती है; जिसे वह गलत अर्थ में लेता है। फ़िल्म में अन्य पात्रों के संबंध में देखें तो एक और किरदार प्रमुख रूप से मित्रता से संबंधित पक्ष को व्यक्त करते दिखता है; वह है— 'छोटू और सोमू'। प्रत्येक परिस्थिति में इनका साथ एक-दूसरे के पूरक के रूप में दिखता है। इनकी घनिष्ठता का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि एक के द्वारा बोली गई बात को दूसरा पूरा करता है। सोमू द्वारा बिल्लू के लिए कही बात, "लड़की तेरे लिए शुभ है।" बिल्लू के जीवन संदर्भ को ही बदल के रख देती है। वहीं आशु सुल्तानिया द्वारा शिलादित्य सिंह से हुई लड़ाई का कारण उसके मित्र को कहे अपशब्द थे। यह ऐसे उदाहरण हैं जो प्रायः किशोरों में देखने को मिलते हैं; उनके 'मित्र और व्यक्तिगत संबंध' किसी ऐसे संदर्भ से जुड़े होते हैं, जो सामान्यतः समाज से छिपाने की प्रकृति लिए होती है। इनका जुड़ाव किशोर द्वारा स्वयं को एक आदर्श के रूप में देखने के कारण होता है। उनकी संगत से वे तमाम अच्छी-बुरी बातों को ग्रहण करते हैं, जो उस समाज में प्रचलित होती हैं।

नशा, अपमान और अपराध

इच्छानुरूप परिणाम की प्राप्ति न होना किशोरों के चित्त को अस्थिर करती है। यह संवेगात्मक अस्थिरता अनायास ही उसके जीवन में दुःख का कारण बनती है। इसे विभिन्न किशोरों में अलग-अलग रूपों में देखा गया है; जैसे— अधिकांश किशोर अपने हाथ में गुदे हुए नाम को ब्लेड अथवा धारदार चीज़ से कुरेद कर शुकून पाने की कोशिश करते हैं तो कोई हर उस जगह लिखे नाम को मिटाने की कोशिश करता है जिसे उसने बड़ी उम्मीद और प्रसन्नता से लिखा होता है। इसी प्रकार नशीली चीज़ों की ओर बढ़ना अवसाद से ग्रसित होने के प्रमुख लक्षण के रूप में दर्ज किया गया है। चयनित फ़िल्म के अनुसार नायक संदर्भ विशेष की असफलता में हर उस चीज़ को नष्ट करने का प्रयास करता है जो उसने बड़ी शिद्दत से की होती है। वह अवसाद से ग्रसित होकर नशे की तरफ भी बढ़ने लगता है। इस तनाव में वह अपने लक्ष्य से भटक जाता है और काफी दिनों तक व्यावसायिक संलग्नता प्रभावित होती है। इस अवसाद से निकलने के लिए वह संदर्भ विशेष में दुष्प्रचार प्रारंभ कर देता

© NCERT not to be republished

है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि किशोर तात्कालिक उपाय के रूप में स्वयं को दु:ख और शोक से निकालने के लिए सही और गलत का विचार किए बिना गलत कदम उठाते हैं; जिसमें वे हिंसा, आत्महत्या, दुष्प्रचार आदि प्रवृत्तियों को अपनाने लगते हैं। उनके द्वारा इस प्रकार के कार्य में बढ़ती संलिप्तता जीवन को नष्ट करने का कार्य करती है। एक तरफ वह अपने सपने, अपने भविष्य को प्रभावित करते हैं तो दूसरी तरफ समाज में उनकी गलत पहचान विकसित हो जाती है। किशोर कम उम्र में विषमलिंगी आकर्षण में घर से भागने जैसी प्रवृत्ति को अंजाम देते भी दिखते हैं। किशोर उम्र में की गई नादानी कभी-कभी गंभीर अपराधों के लिए मार्ग खोल देती है।

'विद्यालय' और 'विद्यालयेत्तर' परिवेश का किशोरों के जीवन पर प्रभाव

इस फ़िल्म के आधार पर स्पष्ट होता है कि किशोरों की सक्रियता के लिए दो प्रमुख क्षेत्र हैं— विद्यालयी परिवेश तथा विद्यालयेत्तर परिवेश। विद्यालयी परिवेश में अध्यापक, कक्षा शिक्षण, पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप आदि होते हैं, जबकि विद्यलायेत्तर परिवेश में मित्रमंडली, व्यावसायिक संलग्नता, परिवार का दवाब आदि है। इस फ़िल्म में प्रदर्शित संदर्भों के आधार विद्यालयी परिवेश में प्रथमतः ग्रामीण परिवेश के विद्यालयों में नगरीय विद्यालय के अनुकरण की प्रवृत्ति, दूसरा हमउम्र साथियों के दबाव में शिक्षण गतिविधियों को बाधित करना तथा तीसरा जीवन कौशल शिक्षा के आभाव में अनुत्पादक कार्यों में बढ़ती संलग्नता सम्मिलित है। वहीं विद्यालयेत्तर परिवेश में खुद की अस्मिता को विकसित करने के प्रयास, अपने चारो तरफ की दुनिया को खोजने का प्रयत्न, विपरीत जेंडर के प्रति आकर्षण, व्यावसायिक द्वंद्व तथा संघर्ष प्रमुख हैं। ग्रामीण परिवेश के किशोरों से संबंधित वे पक्ष हैं, जिन्हें विविध अध्ययनों में सामान्यतः नज़रअंदाज़ किया जाता है अथवा सीमित रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

एक ग्रामीण किशोर के संदर्भ एक शहरी किशोर से भिन्न होते हैं। उनकी जीवनचर्या, दायित्व, काम करने का तरीका, प्राथमिकताएँ, समस्याएँ, भिन्न होती हैं। प्रायः देखा गया है कि एक ही घटना के प्रत्यक्षदर्शी होने के बाद भी उसको देखने, समझने और व्यक्त करने का तरीका एक-दूसरे से भिन्न होता है। कोई उस घटना को नैतिक या अनैतिक समर्थन देते हुए दिखता है तो कोई उसे सही अथवा गलत सिद्ध करते, कोई उससे प्रेरित होकर स्वयं को संबद्ध कर भविष्य के लिए योजनाओं का निर्माण प्रारंभ करता है तो किसी के लिए उस घटना विशेष का होना या न होना कोई अर्थ नहीं रखता। ऐसी स्थिति में उनकी व्यक्तिगत भिन्नताओं और संदर्भ को अनदेखा कर उनका मूल्यांकन करना उपयुक्त प्रतीत नहीं होता, बल्कि भिन्नतानुरूप सुधार और संलग्नता के अवसर प्रदान करना भविष्योन्मुखी सोच को प्रदर्शित करता है।

समीक्षित फ़िल्म ग्रामीण परिवेश में किशोरों की विभिन्न महत्वाकांक्षाओं और व्यावसायिक संलग्नताओं को अपनी केंद्रीय विषय-वस्तु बनाती है। यदि इस विषय-वस्तु के सापेक्ष देखें तो ग्रामीण परिवेश में माध्यमिक शिक्षा की भूमिका से संबंधित कुछ निहितार्थ प्रकट होते हैं—

- माध्यमिक शिक्षा का तात्पर्य केवल पुस्तकीय ज्ञान देना नहीं है, बल्कि किशोरावस्था की जैविक विशेषताओं के अनुरूप किशोरों को

© NCERT not to be republished

परामर्श और मार्गदर्शन उपलब्ध कराना है। यह परामर्श और मार्गदर्शन केवल जैविकीय विशेषताओं तक सीमित न होकर सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों को भी संबोधित करता हो।

- किशोर अस्मिता का संबंध केवल सरकारी नौकरी से नहीं है। स्वावलंबन एवं स्व-रोज़गार का क्षेत्र भी एक प्रमुख आयाम है, जिससे संबंधित मार्गदर्शन की किशोरों को आवश्यकता होती है।
- किशोरों के हमउम्र साथियों का दबाव और उस दबाव जनित प्रतिक्रियाओं से संबंधित जीवन कौशल को भी शिक्षा के माध्यम से पोषित किए जाने की आवश्यकता है।
- विद्यालयेत्तर परिवेश में किशोरों की व्यावसायिक संलग्नता को प्रायः शिक्षण के दौरान संज्ञान में लिया जाना चाहिए।
- यह फ़िल्म स्थानीय और वैश्विक बदलावों के बीच बड़े होते किशोरों की महत्वाकांक्षा और संलग्नता को प्रकट करती है। विद्यालय की दैनिक गतिविधियों में इनसे संबंधित मार्गदर्शन और परामर्श की व्यवस्था की जा सकती है।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

अरोड़ा, पंकज. 2015. किशोरावस्था— किसकी ज़िम्मेदारी. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. वर्ष 35, अंक 3. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

कुमार, सतेंद्र. 2018. *बदलता गाँव बदलता देहात— एक नई सामाजिकता का उदय*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. नयी दिल्ली

परोदा, आर. एस. 2018. *युवाओं को कृषि की ओर प्रेरित और आकर्षित करना*. कार्यनीति पत्र. ट्रस्ट फ़ॉर एडवांसमेंट ऑफ़ एग्रीकल्चर सनिसिस (टास), नयी दिल्ली.

यादव, सरोज. 2013. जाने किशोर मन. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. वर्ष 34, अंक 2. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

यू.एन.एन.पी.ए. और सेंसस. 2011. *ए प्रोफ़ाइल ऑफ़ एडोलेसेंस एंड यूथ इन इंडिया*. 14 जनवरी, 2021 को https://india.unfpa.org/sites/default/files/pub-pdf/AProfileofAdolescentsandYouthinIndia_0.pdf से प्राप्त किया गया है.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2017. *किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम— प्रशिक्षण एवं संसाधन सामग्री*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

शर्मा, नीरजा. 2019. *किशोरावस्था— उलझाव-सुलझाव*. अनुवादक-रेनू चौहान. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नयी दिल्ली.